द्वितीय अध्याय

अभिमन्यु अनत के उपन्यासों का विषयगत विवेचन

द्वितीय अध्याय

अभिमन्यु अनत के उपन्यासों का विषयगत विवेचन

प्रास्ताविक

मॉरिशस की स्वतन्त्रता के पश्चात ही मॉरिशस साहित्य का प्रकाशन हुआ । वहाँ से प्रकाशित उपन्यासों में विषय–वैविध्य एवं शिल्प प्रयोग की दृष्टि से संख्यात्मक एवं गुणात्मक लेखन कथा–सम्राट अभिमन्यु अनत ने किया हैं । अतः इस युग को, ' अनत युग ' की संज्ञा दी गयी । वह सार्थक है । अभिमन्यु अनत ने ही स्वतंन्त्रता के पश्चात उपन्यास–विधा की मौलिक उद्‌भावना., उसके पल्लवन, पुष्पन , विकसन और उसकी समृद्‌ध परम्परा को पुष्ट किया ।

अभिमन्यु अनत ने साहित्य की विविध विधाओं में लेखन कार्य किया परन्तु उपन्यासकार के रूप में ही वे अधिक परिचित रहे । अतः मॉरिशस के प्रख्यात., प्रथम उपन्यासकार अभिमन्यु अनत ने कुल तेईस उपन्यास लिखें । उनके उपन्यासों में मॉरिशसी–समाज एवं उनकी विविध समस्याएँ प्रतिबिंबित हुई हैं । उन्होंने अपने उपन्यासों में जितना बल मॉरिशस के पूर्व इतिहास पर दिया है उतना ही नारी–मुक्ति पर । उनके नारी–वर्णन को ' संघर्ष–पूर्ण नारी ' की संज्ञा दी जाती है । उनके साहित्य में जहाँ एक ओर मॉरिशस की आजादी के पूर्व की संघर्षमयी स्थिति है वहीं दूसरी ओर आजादी के बाद के मूल्यों का हनन , राजनीतिक भ्रष्टाचार , महँगाई का कुचक्र हैं ।

उन्होंने अपने उपन्यासों में नवयुवकों से वर्तमान हालात में परिवर्तन करने का आह्‌वान किया हैं । उनके उपन्यासों में विषय–वैविध्य हैं । इसी कारण उनके उपन्यासों में मॉरिशस का समाज संपूर्णता से साकार हुआ है ।

(1) और नदी बहती रही (1970) ——

अभिमन्यु अनत का यह प्रथम उपन्यास आत्मकथात्मक शैली में लिखा है । इसमें मजदुरों की दयनीय स्थिति , उनकी बेबसी., दुरवस्था , उनके शोषण और दमन की करूणामय कथा है । इसमें धनेश्वरी–राजेश तथा मधुवन–सुमित्रा के प्रेम और विवाह की समस्या को

अभिमन्यु अनत ने पेश किया है । मजदुर–समस्या के साथ ही महाजनी सभ्यता के दोषों से जकड़े ऋण ग्रस्त परिवारों की बेबसी को भी अभिमन्यु अनत ने इस रचना के जरिए अनावृत्त किया है । इसमें नारी–जीवन की विवशताओं की कृष्णवती के माध्यम से प्रस्तुति हुई हैं ।

प्रस्तुत उपन्यास का नायक मधूवन है । वह मजदुरों की वर्तमान स्थिति में, जाति–भेद एवं बंधनों में परिवर्तन लाना चाहता है। मधुवन खेतों में काम कर अपने कर्जे को चुकाना चाहता हैं । वह राजेश–धनेश्वरी का ब्याह कर जातीय बंधनों को तोड़ता हैं । मधुवन अपनी मुँहबोली बहन का जीवन फिरसे सँवारना चाहता है, मगर कृष्णवती अपने भाई की भलाई के खातिर स्वयं ही अविवाहित रह कर एक अनुकरणीय मिसाल कायम करती है ।

उपन्यास भले ही मधुकर और सुमित्रा तथा राजेश एवं धनेश्वरी के प्रेम–संबंधों पर आधारित है पर कृष्णवती का चरित्र सबसे स्तरीय बन गया है । प्रस्तुत उपन्यास द्वारा अभिमन्यु अनत बताना चाहते है कि जीवन में कितने भी अवरोध क्यों न आये, मनुष्य को हमेशा आगे बढ़ते रहना चाहिए ।

(2) <u>एक बीधा प्यार</u> : (1972) —

प्रस्तुत उपन्यास में ग्रामीण जीवन में व्याप्त सामाजिक कटुताओं, आर्थिक विसंगतियों, सामाजिक आचार–विचार, खेतिहर किसान हीरा के परिवार के अदम्य साहस, निष्ठा तथा श्रम की महिमा का आख्याान प्रस्तुत किया हैं । यह उपन्यास निश्छल प्यार की कथा–सोम–करूण्रा, विमला–सुरेन्द्र के साथ ही नायक सोम की बीधे के प्रति ललक, खेती के प्रति झुकाव की कथा भी हैं । समाज–प्रतिष्ठित और राजनीतिक व्यक्तियों के वरदहस्त से उच्छृंखल हुए जोगिया जैसे दरिन्द्रों के काले कारनामों का पर्दाफाश भी इसमें हूआ है । युवा वर्ग के संगठन तथा उनकी लड़ाई भी उपन्यास में परिलक्षित होती हैं ।

उपन्यास का नायक सोम नौकरी की आशा न रख कर खेतों में काम करता है । क्योंकि उसका बड़ा भाई हीरा अपाहिज होने के बावजूद खेतो में दिन–रात मेहनत कर परिवार की देखभाल करता है । अपाहिज भाई द्वारा की गई सब्जी की खेती को जब जोगिया नामक जमींदार आपसी दुश्मनी के कारण उखाड़ देता है तो सोम और जोगिया के बीच की लड़ाई में जोगिया मारा जाता है। किन्तु सोम के मित्र सुरेन की गवाही की वजह से वह बच

जाता है । सोम के परिवार ने करूणा नामक दुःखी लड़की को अपने घर में पनाह दी है । सोम उसे चाहता है ,मगर वह हीरा से प्रेम करती है । सोम आखिर आपने भाई के खातिर करूणा को पूर्ण रूप से भुलने का फैसला कर खेतों में ही अपनी सार्थकता मानता हैं ।

प्रस्तुत उपन्यास के बारे में अभिमन्यु अनत का कहना है कि, " मेरे देश की युवा पीढ़ी जिस समय खेतों से अपने को काटकर मात्र अफसरशाही का ख्वाब देखने लगी थी , , , , उस समय जवानों का अपने कृषिप्रधान देश के साथ उन तमाम कठिनाइयों के बावजूद भी जो रिश्ता होना चाहिए था , उसे मैंने इस उपन्यास में प्रस्तुत करना चाहा है ।"[1]

(3) तपती दोपहरी : (1977) ——

प्रस्तुत उपन्यास मॉरिशस के एक निम्न मध्य वित्त हिन्दू परिवार की रूला देनी वाली कहानी है । इसमें प्रेम–विवाह के साथ ही , शोषित–समाज की दर्द–भरी जिन्दगी की जीती जागती तस्वीर हैं । देश के बेरोजगार युवकों , किसान–मजदूर के सघर्षों तथा मजदुरों के संगठन , कृषक बनने की प्रतिष्ठा अदि को इसमे स्वर दिया गया हैं । यह उपन्यास नायक राजेन के संघर्ष के कई स्तरों को पारिभाषित करने वाला सामाजिक उपन्यास है ।

उपन्यास का नायक राजेन अत्यंत गरीब परिवार का होने के कारण दिन भर बस गराज में काम कर रात में पढ़ाई करता है । इसी बीच उसकी कंपनी में हड़ताल हो जाती है । वह उस हड़ताल में शामिल होना चाहता है पर नौकरी जाने के ड़र से दूर रहता है । घर पर उसकी बहन साधना है । राजेन उसका ब्याह करना चाहता है । परन्तु गरीबी के कारण ब्याह हो नहीं पाता । आखिर विवश होकर मौजूदा सामाजिक एवं आर्थिक असमानता को मिटाने के लिए हड़ताल में शामिल होता है । परिणाम स्वरूप उसे नौकरी से हाथ धोना पड़ता है। आखिर खेतों में ही वह अपने जीवन की सार्थकता मानता है। खेतों में भी वही कोठी वालों का मजदुरों पर का अन्याय देख, राजने खेतों में मजदुरों का संगठन बनाने का निश्चय करता है ।

---

1 डॉ, कमलकिशोर गोयनका – अभिमन्यु अनत एक बातचीत – पृष्ठ–73 ।

प्रस्तुत उपन्यास में प्रेम और विद्रोह दोनों है । क्योंकि न ही राजेन अपने प्रेम को पाता है और न ही साधना को । इसका मुख्य कारण गरीब स्थिति, आर्थिक असमानता है। अभिमन्यु अनत यहाँ भी राजेन द्वारा नवयुवकों को खेतों की ओर बढ़ने का आदर्श समझाते है । वे कहते है कि, ' मैं ड़रता हूँ कि कहीं औद्योगिकरण की लपेट में हम खेतों को फिर से जंगल और पथरीली जमीन बनाकर न छोड़ दे ।'[1] उपन्यास पर माहात्मा गांधी के उस विचार का गहरा प्रभाव परिलक्षित होता है। जिसमें वे कहा करते थे कि, सच्चा भारत देहातों में बसा है।

(4) लाल पसीना : (1977)

प्रस्तुत उपन्यास अभिमन्यु अनत का बहुचर्चित ऐतिहासिक उपन्यास है। उपन्यास दो खण्ड़ों में विभक्त है । उपन्यास की कथा मॉरिशस की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर अधारित है। सन् 1850 से 1900 तक ही घटनाओं को उपन्यासकार ने फलक के रूप में चुना हैं । ' लाल पसीना ' उपन्यास के बारे मे अभिमन्यु अनत कहते है, " लाल पसीना' में ड़ेढ सौ साल पहले भारत से पहुँचे हुए उन मजदुरों की कहानी हैं, जिन्हें जानवरों से भी बदतर जीवन मॉरिशस की जीमन पर जीना पड़ा । शोषण की यातनाओं के बीच भी एक ओर वे यहाँ की बंजर भूमि को हरे–भरे खेतों का रूप देने का संकल्प किये रहे तो दूसरी ओर अपनी अस्मिता, अपने अधिकार , के लिए भी संघर्षरत रहे ।"[2]

उपन्यास का प्रारंभ मॉरिशस व्दीप के जन्म की कहानी से हुआ है । मॉरिशस व्दीप के अन्तिम औपनिवेशिक शासन–काल में अंग्रेजों का आधिपत्य भले ही रहा, पर आर्थिक सत्ता फ्रॉसीसी गोरे लोगों के हाथ में ही रही । व्दीप में इन्हीं गोरांग लागों व्दारा काले भारतीय कुली मजदुरों का शोषण होता रहा । जेल से भागे हुए कुन्दन की विगत स्मृतियों से अर्थात पूर्व दीप्ति शैली के आधार पर उपन्यास का आरम्भ हुआ है । जेल से भागकर कुन्दन

---

1 डॉ, कमलकिशोर गोयनका – अभिमन्यु अनत एक बातचीत – पृष्ठ–87 ।

2 अभिमन्यु अनत – आत्म विज्ञापन – पृष्ठ 296।

की मुलाकात युवा किसन सिंह से होती है । गाँव में आकर कुन्दन वहाँ के खेत मजदुरों को उन पर हो रहे अन्याय के विरोध में संघर्ष करने की प्रेरणा देता हैं । परिणाम स्वरूप सभी नव युवक मालिकों का विरोध करते हैं ।

कुन्दन , किसनसिंह, मुखिया लछमनसिंह सभी मजदुरों को संगठित करता है । किसनसिंह मुखिया की बेटी से ब्याह करता है । मजदुरों के संघर्ष को देखते हुए मालिक मजदुरों की माँगे पूरी करते हैं । किन्तु अन्याय का दमन चक्र वापस शुरू होता है । यहीं पर प्रथम खंड की कथा समाप्त होती है ।

व्दितीय खंड में किसनसिंह बूढ़ा हो गया है । पत्नी रेखा की मृत्यु हो गयी है बेटा मदनसिंह को सात साल की सजा हुई है , वह भी धारा के विरूध्द चलने वाला है । किसनसिंह तीन बीधा जमीन बचाने के व्दन्व्द में मालिक की गोली का शिकार हो जाता है। परन्तु बेटा मदनसिंह संघर्ष की प्रक्रिया जारी रखने के लिए होली के अवसर पर सभी लोगों को संगठित करता है । यहाँ उपन्यास का व्दितीय खंड समाप्त हो जाता है ।

उपन्यास में मालिकों की स्वैराचारी प्रवृत्ति के चलते वासना की गंध भी व्याप्त है। साथ ही लेखक ने सामाजिक एवं सांस्कृतिक पक्ष को भी बखूबी उभारा है । प्रस्तुत उपन्यास मे अभिमन्यु अनत को ऐतिहासिकता की रक्षा करने में पूरी सफलता मिली है ।

(5) हड़ताल कल होगी (1979)

प्रस्तुत अनुसंधान की केन्द्रीय रचना है । यह एक सामाजिक संघर्ष का चित्रण करनेवाली रचना है । इसमें मजदूर नेता अमित एक गोरे वर्ण की लड़की जानीन से प्रेम करता है । रंग–भेद के चलते , इस प्रेम को गोरे समाज की स्वीकृति नहीं प्राप्त हो रही है, किन्तु नायक इस भेद को मिटाना चाहता है । अतः वह प्रेम–संघर्ष को जारी रखता है । इस कथा के साथ ही वह मजदुरों को संगठित करके उनके हक की लड़ाई लड़ने में स्वयं को समर्पित करता है । मन्त्री तथा मालिकों की ओर से हड़ताल न करने की धमकी और चेतावनी के बावजूद अमित संघर्ष करने के प्रण से संचालित होकर मजदुरों के हितों की रक्षा की लड़ाई के बल पर रंग–भेद की लड़ाई को लड़ना चाहता है । ' संघर्ष की प्रक्रिया ' में ही उसे असामाजिक तत्वों व्दारा रास्ते से हटा दिया जाता है / पर अमित व्दारा उस लड़ाई का अन्त

नहीं होता । उसका सामाजिक संघर्ष अब भी जारी है । प्रस्तुत रचना में अभिमन्यु अनत ने राजनीतिक षड्यन्त्र और सांस्कृतिक–भाषिक संघर्ष को भी समाज के सम्मुख रखा हैं ।

प्रस्तुत उपन्यास में प्रेम और विद्रोह दोनों भाव हैं । उपन्यास में ये दोनों तत्व समान रूप में सामने आये हैं ,इसके कारण पाठक दो भिन्न कथावस्तुओं के बीच झुलता नजर आता है ।

(6) अपनी ही तलाश (1982) —

प्रस्तुत उपन्यास विचार–प्रधान उपन्यास है । इस उपन्यास की कथा–वस्तु में चिंतन की प्रधानता है,गाम्भीर्य है । प्रस्तुत उपन्यास में जो तलाश है , वह उस लेखक की तलाश है जो पूँजीपति साजिश के तहत एक बांझ स्थिति को पहुँच जाता है , जहाँ सेक्स और पैसा उसकी आत्मा को गिरवी रख लेते है । उपन्यास का नायक वासु , जो स्वंय लेखक का प्रतिनिधि है । वह दूसरों के सहारे खड़ा है उसका अपना कोई अस्तित्व नहीं है । बेकार होने के कारण वह अपने धनपति मित्र सोमू पर निर्भर है। यही पराधीनता उसे अंदर–बाहर से तोड़ देती है । वासु अपनी पुस्तकों को छपवाना चाहता हैं। सोमु उससे वैसा वादा भी करता है। किन्तु वादे से मुँह मोड़कर सोमु उसका गलत कार्यों के लिए लाभ उठाता है । सोमु और मोना दोनों इस चाल में कामयाब हो जाते हैं । वासु के घर से पुलिस को तीन पैकेट अफीम मिलती है । वासु को जेल हो जाती है । प्रेमिका रूना वासु को नयी जिंदगी शुरू करने के लिए प्रोत्साहित करती है । आखिर वासु रूना की बात मानकर अपनी पूर्व गिरवीपन की जिंदगी से छूटने के लिए फिर अपनी तलाश जारी रखता है।

प्रस्तुत उपन्यास के बारे मे अभिमन्यु अनत का कहना है , " सेक्स और धन की साजिश की कहानी है, ' अपनी ही तलाश ' , , , , , , वह साजिश जिसका अगर आभास वक्त पर नहीं हो जाता तो आदमी बौना बनकर रह जाता है । आदमीयत को गिरवी रखने के चंद क्षणो का उपन्यास है , , , ' अपनी ही तलाश ।" [1]

---

1 डॉ. कमलकिशोर गोयनका – अभिमन्यु अनत एक बातचीत –पृष्ठ 99 ।

प्रस्तुत उपन्यास में वैचारिक विषमता , छलकपट , साथ ही सैक्स के अनेक दृश्य–परिदृश्य हैं, जो कथा और चरित्र की माँग के अनुरूप नग्न यथार्थ तक पहुँच गये हैं, पर वासु जिस दुनिया में है उस स्वार्थी दुनियाँ को दिखाने के लिए ऐसा चित्रण किया गया है ।

(7) पर पगडंडी नहीं मरती : (1983)

अभिमन्यु अनत अपने ' लाल पसीना ' उपन्यास के बाद ' पर पगडंडी नहीं मरती ' को अपना दूसरा महत्वपूर्ण उपन्यास मानते है । क्योंकि अभिमन्यु अनत मानते है कि ' पर पगडी नहीं मरती ' की अंजू जिस त्याग और साहस को उजागर करती हैं , वह ' लाल पसीना ' के मर्दो के संघर्ष से किसी तरह कम नहीं है।

प्रस्तुत उपन्यास चार खण्डों में विभक्त है । उपन्यास का नायक विक्रम है और नायिका अंजू । उपन्यास की मूल आत्मा नायक–नायिका का जमीन के प्रति लगाव और मजदुरों के संगठन के बल पर बेहतर जीवन जीने के लिए किया गया संघर्ष है। नायक विक्रम अपने परिवार की आर्थिक स्थिति सुधारने के खातिर खेतों में जाने की अपेक्षा अपने मित्र की टैक्सी चलाता है । उसे (नायक) खेतों में काम करना पसंद नहीं क्योंकि वहाँ मजदुरों के साथ जानवरों जैसा व्यवहार किया जाता है । लेकिन विक्रम की प्रेमिका अंजू हर हालत में अपनी इज्जत बचाते हुए खेतों में काम करती है । जब विक्रम कार–दुर्घेटना में आपना एक हाथ और एक पाँव गवाता है , तभी उसे अपनी गलती का एहसास होता है कि खेतों से दूर भागकर जाने का ही यह परिणाम है ।

अंत में विक्रम अंजू के साथ मजदुरों को संगठित कर अपने हक के लिए कोठी के मालिकों के साथ संघर्ष करता है । केन्द्रिय संध का भी सहयोग उन्हें प्राप्त होता है।उनका कार्य थोडा आसान होता है। अंजू विक्रम को अपना जीवन साथी बनाने का फैसला कर उसके संघर्ष को अपना मानती है । अभिमन्यु अनत अंजू के सामाजिक संघर्ष के बारे में कहते है , "उसके जीवन का पहला भाग था , उसके बाप का मजदुरों के लिए संघर्ष और मृत्यु । दूसरा भाग था उसके भाई की घुटन , कुंठा , भटकाव और सजा । तीसरा भाग था उसका अपने और माँ के लिए जीविका । वह अपने को अपने चौथे भाग में , , , , विक्रम के हाथ भी थी

उसके पाँव भी। वह विक्रम की खोयी सुन्दरता भी थी ।"[1]

प्रस्तुत उपन्यास में ऐतिहासिक यातना, धर्म–परिवर्तन के स्वरूप, जातीय अहं की दीवार, कोठी–मालिकों के दुर्व्यवहार, सरदारों को कुनीति, गाँव और शहर के अन्तर को प्रभावी रूप से चित्रित किया हैं । अतः विक्रम के पराक्रम तथा अंजू के त्याग के सम्मिश्रण का प्रतिफलन है यह उपन्यास ।

(8) फैसला आपका : (1986) —

प्रस्तुत उपन्यास लघु उपन्यास है । इसमें एक नारी को राजनीतिक षड्यंत्र का शिकार होते हुए दिखाया गया है। साथ ही मॉरिशस के समाज में स्थित राजनीतिक नरक का चित्रण किया हैं। प्रस्तुत उपन्यास शिल्प की दृष्टि से एक नया प्रयोग है। वह सफल सिद्ध हुआ है ।

उपन्यास की नायिका प्रिया सिबालिक प्लेजॉस हवाई अड्डे पर पन्द्रह लाख के सोने के जेवरों तथा पाँच किलो अफीम के साथ पकड़े जाने पर जेल में बन्द कर दी जाती है । वह जेल की कोठरी में रहते हुए सामाजिक सुरक्षा मंत्री हेमराज से अपने प्रेम–सम्बन्धों, विवाह और पति के व्यवहार, मुकद्दमा और अदालत में होने वाली वकीलों की जिरहो, विभिन्न व्यक्तियों की गवाहियों, पूर्व प्रेमी के सद्भाव और उसके छुड़ाने के प्रयासों, प्रेम–प्रसंगों आदि की कल्पना करती है और घटित तथा अघटित का ऐसा काल्पनिक भवन बनाती है कि सब कुछ यथार्थ लगने लगता है । पाठक बीच–बीच में यह जानता है कि प्रिया मात्र सोच रही है, लेकिन उसका सोचना, उसका कल्पना से प्रसंगों एवं घटनाओं की सृष्टि करना, कुछ ऐसा यथार्थपूर्ण एवं कौतुहल से भरा है कि पाठक की उत्सुकता बराबर बनी रहती है ।

प्रिया सिबालिक सामाजिक सुरक्षा मन्त्री के साजिश और सुनीता नाम की महिला की ईर्ष्या और प्रतिशोध की भावना का शिकार होती है । उसका महत्त्वांकांक्षी पति केशव अब उसे पूछता नहीं, किन्तु उसका पूर्व प्रेमी मनोज उसकी जमानत कराता है। किन्तु कारावास और कारावास के बाहर उसके मन मस्तिष्क पर एक कोर्ट की प्रक्रिया चलती रहती है । ऐसे में

---

1 अभिमन्यु अनत – पर पगड़ंडी नहीं मरती – पृष्ठ–267 ।

पूरा उपन्यास ही एक अदालत की मानसिक प्रक्रिया का कथात्मक रूप हो गया है । उपन्यास में राजनेताओं व्दारा तस्करी तथा अवैध धर्नाजन के षड्यन्त्रों एवं राष्ट्र–विरोधी प्रयासों का पर्दाफाश किया गया हैं । अभिमनयु अनत चाहते है कि प्रिया पर तस्करी करने के मुकद्दमे के फैसले से पहले पाठक इस मुकद्दमे का फैसला करें और बतायें कि इसके लिए सामाजिक सुरक्षा मन्त्री दोषी है या उनकी प्रेमिका प्रिया । अभिमन्यु अनत के इस उपन्यास में खूबी यह है कि अदालत के मुकद्दमें के फैसले से पहले ही उपन्यास खत्म हो जाता है । प्रिया मात्र शतरंज का मोहरा है । उसका संचालक सामाजिक सुरक्षा मन्त्री श्री हेमराज राजमन ही है और वही तस्करी तथा अवैध व्यापार के लिए उत्तरदायी है । लेखक की यहाँ अपने देश को नारकीय परिस्थितियों से मुक्त कराने की छटपटाहट दिखाई देती है । उपन्यास में फॅटसी का प्रयोग उसे रोचक बनाता है ।

(9) मार्कट्वेन का स्वर्ग : (1986) —

प्रस्तुत उपन्यास में अभिमन्यु अनत ने जिस देश को मार्कट्वेन ने ' धरती का स्वर्ग ' कहा, उस देश में स्थित नारकीय परिस्थितियों का पर्दाफाश करने का साहस किया है।

प्रस्तुत उपन्यास मॉरिशस का यथार्थ है । एक रेड इंडियन लड़की सिल्वी के माध्यम से उसे प्रस्तुत किया गया है । अभिमन्यु अनत ने इस उपन्यास के माध्यम से राष्ट्र विरोधी शक्तियों का पर्दाफाश करने का प्रयत्न किया है।

प्रस्तुत उपन्यास का नायक प्रेम और नायिका सिल्वी है । बीमार सिल्वी अपने पत्रकार भाई के साथ मॉरिशस की यात्रा पर आती है तभी नायक प्रेम नायिका सिल्वी को खुबसूरत मॉरिशस समाज में व्याप्त विसंगतियां, आर्थिक असमानताओं, सांस्कृतिक साम्राज्यवाद, पर्यटकों की सुख सुविधा को मुहिया कराने के हेतु आर्थिक सन्त्रास साथ ही देश की अस्मिता की रक्षा, जीवन–मूल्यों की नीलामी, रंगभेद के चलते काले–गोरे के ऊँच–नीच के बीच भावना आदि से अवगत कराता है।

अतः स्पष्ट है अभिमन्यु अनत प्रस्तुत उपन्यास में व्दीप की नारकीय परिस्थितियों एवं सभी षड्यन्त्रों को जड़ से उखाड़ना चाहते है और वहाँ वास्तविक स्वर्ग लाने की तम्मना रखते है ।

(10) मुड़िया पहाड़ बोल उठा : (1987) —

प्रस्तुत उपन्यास में एक ओर नारी–संघर्ष को दिखाया गया है तो वही दूसरी ओर राजनीतिक क्षेत्र के नेताओं की चुनाव जितने के लिए की गयी साजिशों का पर्दाफाश हैं । उपन्यास की नायिका नेहा और नायक उमेश है । नायिका नेहा अपने परिवार एवं प्रेमी उमेश के सब प्रकार के दबाबों से स्वयं को मुक्त रखते हुए श्रमिक बनना स्वीकार करती है। वह गरिमामय सरकारी नौकरी का मोह त्याग कर श्रमिक महिलाओं के आन्दोलन का नेतृत्व करती है। नायक उमेश अपने मित्र अरूण को 'श्रमिक दल' का कैडिडेट बनाकर चुनाव लड़वाता है। उसमें उमेश चुनाव की समस्त रणनीति और हथकण्डों का इस्तमाल कर अरूण को उद्योग मंत्रालय में मन्त्री बनाता है ।

उपन्यास की नायिका नेहा इसी सरकार के सामने महिला मजदुरों पर हुए अन्याय के विरोध में आंदोलन करती है। आखिर महिलाओं के आंदोलन को देखते हुए मन्त्री परिषद द्वारा 'फॅक्टरी का राष्ट्रीयकरण' किया जाता है । अतः अंत में संघटित महिला श्रमिको का आंदोनल सफल होता हैं ।

इस प्रकार प्रस्तुत उपन्यास एक नये आर्थिक जीवन की शुरूवात करता है, जिसमें सरकार और श्रमिक दोनों ही मिल के स्वामी होते हैं । यहाँ राजनीतिक भ्रष्टाचार का और कारखाने के मालिकों के दुर्व्यवहार का पर्दाफाश किया हैं । साथ ही डॉक्टर–वकील जैसे समाज के बुध्दिजीवी कहे जाने वाले व्यक्तियों तथा पुलिस व्यवस्था के अपराधों का भी भण्डाफोड़ किया हैं ।

(11) शब्द भंग : (1989) —

प्रस्तुत उपन्यास में भी राजनीतिक लोगों के काले कारनामों का पर्दाफाश किया है। इसमें अभिमन्यु अनत ने पत्रकार नायक रोबीन के माध्यम से समाज की उन हस्तियों को बेनकाब किया है ,जो नशीले पदार्थों का सौदा कर देश को मौत के मुँह में ढ़केल रहे हैं और स्वयं दिन–दुनी रात चौगुनी तरक्की कर रहे है , अपनी तिजोरी भर रहे हैं। उपन्यास में अच्छे खासे मन्त्री , उद्योगपति पर्दे में रहकर अपने आदर्शों का ढिढ़ोरा पीटते हैं, पर रोबीन जैसे लोगों

को बड़े तरीके से अपने मार्ग से हटाना चाहते हैं किन्तु रोबीन इन शक्तिशाली षड़यन्त्रकारियों का पदार्फाश करता है और बड़े से बड़े प्रलोभनों पर भी बिकने को तैयार नहीं होता । परिणाम स्वरूपं माफिया के काले कारनामों को उद्घाटित करने वाले दस्तावेजों के साथ मार दिया जाता है। रोबीन की हत्या एक प्रकार का शब्द भंग ही है। नशीले पदार्थों काव्यापार करने वाले शक्तिशाली मन्त्रियों और अधिकारियों के विरूध्द उसके पास अकाट्य प्रमाण थे। उनको छापने से पहले ही उसे समाप्त कर दिया जाता है ।

अतः स्पष्ट है कि प्रस्तुत उपन्यास में भी अभिमन्यु अनत ने अपने देश की नारकीय परिस्थितियों का यर्थाथ चित्रण किया है । यहाँ भी उपन्यासकार की अपने देश को वास्तविक स्वर्ग बनाने की छटपटाहट दिखाई देती है । आदर्शोन्मुख यथार्थवादी उपन्यास लेखन की यह परंपरा ही अभिमन्यु अनत को ' मॉरिशस का प्रेमचंद' सिद्ध करती हैं ।

निष्कर्ष

मॉरिशस का इतिहास और वर्तमान अभिमन्यु अनत के साहित्य की नींव है। उनके उपन्यासों में एक ओर अतीत के प्रति गौरव और श्रद्धा का भाव है तो वहीं दूसरी ओर वर्तमान व्यवस्था के प्रति तीव्र आक्रोश एवं चिंता का भाव । उनके सारे उपन्यास मॉरिशस के समाज की वर्तमान समस्याओं को मिटाने के लिए छटपटाते नजर आते हैं ।

अभिमन्यु अनत के अधिकतर उपन्यास समस्याप्रधान रहे हैं। मॉरिशस किसी समय फ्रेंचों का उपनिवेश था । फ्रेंचों के अन्याय–अत्याचार की परम्परा को मॉरिशस की आजादी के बाद भी कभी वर्ग–भेद के रूप में तो कभी वर्ण–भेद के रूप में देखा जा सकता हैं।

अभिमन्यु अनत अपने उपन्यासों में वर्ग एवं वर्ण भेद को प्राधान्य देते दृष्टिगोचर होते हैं । उनके उपन्यासों में समाज मे स्थित विषमता , मूल्यों का हनन ,राजनीतिक वैश्यावृत्ति,भष्टाचार, रिश्तों का टूटना , विसंस्कृतिकरण , व्यक्ति की घूटन,आर्थिक तंगी , महँगाई जाति-पाति का कुचक्र , बेकारी, हताशा , मन्त्रियों की यात्राएँ आदि सब वर्तमान समस्याओं का रूप लेकर उभरते दिखाई देते हैं। यही कारण है कि उनके उपन्यास सिर्फ पठनीय बनते हैं अपितु वे पाठकों को सोचने,समझने और अंतर्मुख होने के लिए बाध्य करते हैं ।

अभिमन्यु अनत ने अब तक कुल मिलाकर तेईस उपन्यासों की रचना कर,अपनी बहुप्रसव प्रतिभा का परिचय दिया है । सामाजिक उपन्यास लिखना उनकी प्रवृत्ति रही है। वे राजनीति को सामाजिक विषमता की जड़ मानते हैं। यही कारण है कि उन्होंने विशुद्ध राजनीतिक कथानकों को लेकर दो उपन्यास रचे । इसमें उन्होंने राजनीतिक छलवा, धिनौनेपन, विघटन, टूटन, स्वार्थवाद, खुदगर्जी,सौदेबाजी, मुनाफाखोरी, रिश्वत, भाई–भतीजा वाद, झूठे आश्वासन, जातिवाद आदि का मार्मिक चित्रण कर, गिरते मूल्यों के प्रति चिन्ता व्यक्त की हैं । 'मुंड़िया पहाड़ बोल उठा', 'शब्द–भंग' जैसे उपन्यासों में वे वर्तमान राजनीतिज्ञों पर व्यंग्य कसने में कोई कसर नहीं छोड़ते । विचारप्रधान उपन्यास, 'अपनी ही तलाश' उनके चिंतक व्यक्तित्व को रेखांकित करता है। सामाजिक उपन्यास समकालिन समस्या पर लिखे गए हैं । लग–भग सारे उपन्यास वर्ग संघर्ष को ही व्यक्त करते हैं,जिससे अभिमन्यु अनत के साम्यवादी होने की बात स्पष्ट होती है । संघर्ष,संघटन, परिवर्तन, माँगे, मोर्चे,हड़ताल,आन्दोलन जैसे दृश्यों का होना जैसे उनके उपन्यासों की शर्त होती है।

अभिमन्यु अनत ने नारी को भी शोषित वर्ग का प्रतीक माना है । मजदुरों की तरह नारी की कितनी ही समस्याएँ उनके उपन्यास की नायिकाएँ व्यक्त करती है ।'और नदी बहती रही' की कृष्णावती, 'हड़ताल कल होगी' की जानीन, 'पर पगड़डी नहीं मरती' की अंजू इस युग की नारी की पीड़ा का प्रतिनिधित्व करती हैं । उनके कुछ उपन्यास मॉरिशस के जनजीवन, खेती, मजदूरी ,जैसे क्षेत्रों के यर्थाथ चित्र बनकर प्रस्तुत हुए है । कुछ उपन्यासों में उन्होंने पर्यटकों के चित्रण से मॉरिशस की अपनी एक अलग समस्या का चित्रण किया है । आज कल पर्यटन मॉरिशस का प्राण बनता चला जा रहा है किन्तु उनके उपन्यासों में मॉरिशस में पर्यटकों से निर्मित गंभीर समस्याओं का चित्रण हैं।वह उनके सूक्ष्म निरीक्षण का नतिजा है। उन्होंने अपने 'लाल पसीना' उपन्यास में मॉरिशस के इतिहास को सुरक्षित रखा है।

अभिमन्यु अनत ने अपने उपन्यासों के अंतर्गत सामाजिक,अर्थिक,राजनीतिक आदि विषयों को बड़ी खूबी से आत्मसात कर अपने कथानकों को रोचक बनाया हैं । उनके उपन्यासों में विषय वैविध्य देखते ही बनता हैं। शिल्प,कथानक, एक जैसे होकर भी शैली वैविध्य के साथ उद्देश्य के प्रति अटल निष्ठा,उनके उपन्यास को साहित्यिक महत्व की अपेक्षा सामजिक परिवर्तन का साधन बनाते नजर आते हैं ।